DOI: 10.51220/hjssh.v8i1.10

Himalayan J. Soc.Sci. & Humanities Vol- 8 pp.79 -81, December, 2013, ISSN. 0975 - 9891

भारतीय संस्कृति एवं मुक्त शिक्षाः प्राचीनकाल से प्रवर्तमान तक

कुसुम डोबरियाल
संस्कृत विभाग, हे0न0ब0 गढ़वाल विष्ठवविद्यालय
पौड़ी परिसर 246001 उत्तराखण्ड

Received: 16-11-2013 **Revised: 26-12-2013** **Accepted: 30-12-2013**

ABSTRACT

भारत में प्राचीनकाल से ही वेंदो पर आधारित शिक्षा समाज में सभ्यता का आधार रही। अतः प्रथम मुक्तशिक्षा के रूप में वैदिक शिक्षा को मान्यता दी जाती है। महाभारत काल में कर्मप्रधान एवं धर्मपालन शिक्षा समाज को प्रदान की गई। महाकाव्य ''रामायण'' के माध्यम से भी धर्मानुशासन के पालन की शिक्षा समाज को दी गई। ये दोनों रूप भी प्राचीन मुक्त शिक्षा के ही रूप माने जा सकते हैं। मुक्त शिक्षा की अपनी विशिष्टतायें होने के कारण वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इसके व्यापक प्रचार प्रसार की आवश्यकता है जिसमें समाज का एक बहुत बड़ा वर्ग लाभान्वित हो सके जो घर अथवा कार्य क्षेत्र में अत्यधिक व्यस्तता के कारण, भौगोलिक परिस्थितियों या संसाधनों की कमी के कारण अथवा कम उम्र में पारिवारिक बाध्यता के कारण रोज़गार करने से शिक्षा प्राप्ति से वंचित रह गये हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में मुक्त शिक्षा की महत्ता तथा इसकी व्यस्थापन में वांछित सुधार की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया है।

KEY WORDS-: मुक्त शिक्षा, भारतीय संस्कृति,वर्तमान परिदृश्य,भविष्य चिंतन

मानव सभ्यता का विकास उसकी शिक्षा एवं जीवनयापन सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु शोध परक सोच के कारण हुआ। पत्थरों से अग्नि की उत्पत्ति हो अथवा लकड़ी के चक्के से भार ले जाने का शोध। पेड़ पौधों के रेशो से वस्त्र बनाना हो अथवा जड़ी बूटी से विभिन्न रोगों के उपचार की तथ्यपरक जानकारी प्राप्त करना,सभी मानव सभ्यता के विकास के प्रतीक माने जाते है। शनैः-शनैः प्राप्त जानकारी की शिक्षा समाज में प्रसारित करना एक रूपेण मुक्त शिक्षा का ही स्वरूप था।[1] प्राचीनतम सभ्यताओं से ज्ञात होता है कि 3500 ईसा पूर्व वर्षो में विश्व में भिन्न-भिन्न प्रकार की लिपियों का विकास हुआ। ईसा पूर्व 2000 वर्षो के आसपास हीरोग्लीफिक लिपि का पत्थरों/ शिलाओं पर प्रयोग[2] एवं वानस्पतिक पत्रों पर स्याही से लेखन और तत्पश्चात ग्रीक, लेटिन, हीब्रो, ओरेकल, वोन, माया आदि लिपियों की खोज शिक्षा प्रसारित करने के उद्देश्य से हुई।

भारत में 1500से 600 ईसा पूर्व वर्षो के काल को वैदिककाल माना गया है जब वेदों पर अधारित शिक्षा समाज में सभ्यता का आधार रही। अतः प्रथम मुक्तशिक्षा के रूप में वैदिक शिक्षा को मान्यता दी जाती है। मुक्त शिक्षा का एक अन्यरूप 'उपनिषदों' में मिलता है, जहां गुरू-शिष्य सत्य की खोज में एक अन्वेषणात्मक शिक्षा यात्रा पर निकल पड़ते हैं तथा प्रश्नोत्तर अथवा तर्क वितर्क के माध्यम से शिक्षा प्रसारित करते है।[3] अनौपचारिक शिक्षा भारतीय संस्कृति की रीढ़ रही है। शिक्षा की गुरूकुल पद्धति एक प्रकार से